**ओ३म्**

**-आर्यसमाज धामावाला देहरादून में साप्ताहिक रविवारीय सत्संग-**

**“वेद पढ़कर दूसरों में उसका प्रचार करें: डा. यज्ञवीर”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

हमारे एक वरिष्ठ साथी श्री ललित मोहन पाण्डेय का आज प्रातः आर्यसमाज धामावाला, देहरादून से हमें फोन आया। उन्होंने सूचित किया कि वह आर्यसमाज के सत्संग में आये हुए हैं और कुछ देर बाद यहां देहरादून के गुरुकुल पौंधा के आचार्य डा. यज्ञवीर जी का प्रवचन होगा। इस जानकारी को प्राप्त कर हम भी वहां पहुंच गये। इसका एक कारण वहां आर्यसमाज की नवगठित कार्यकारिणी व अधिकारियों को बधाई देना भी था जो विगत रविवार को ही गठित की गई है। हम वहां जैसे ही पहुंचे आर्यसमाज के पुरोहित श्री विद्यापति शास्त्री जी का सम्बोधन एवं सामूहिक प्रार्थना सम्पन्न हो रही थी। इसके बाद समाज के युवा मंत्री श्री नवदीप भट्ट ने डा. आचार्य यज्ञवीर जी को लगभग 40 मिनट के प्रवचन के लिए आमंत्रित किया। अपने प्रवचन के आरम्भ में डा. यज्ञवीर जी ने श्रावण मास की चर्चा की और कहा कि प्राचीन काल में इस मास में ऋषि मुनि गृहस्थियों को वेद और वेद विद्या से अवगत कराते थे और उन्हें स्वाध्याय व साधना में प्रवृत्त करते थे। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज श्रावण मास व इसके मुख्य पर्व श्रावणी को वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन कर मनाता है। प्राचीन समय में श्रावणी पर्व पर हम वेद पढ़ने का उपाकर्म करते थे। इस अवसर पर वेद और उपनिषदों आदि ग्रन्थों के आधार पर ज्ञान चर्चा होती थी। उन्होंने कहा हमारे जैन मुनियों में अब भी चातुर्मास मनाने की परम्परा विद्यमान है। विद्वान आचार्य ने कहा कि वेद के प्रचार द्वारा ज्ञान की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि यदि हम विद्या का प्रचार व प्रसार नहीं करेंगे तो वह समाप्त हो जायेगी। डा. यज्ञवीर ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक और उसके प्रचार व प्रसार को हमारा परम धर्म बताया है। अतः श्रावण मास में हमें वेदों का श्रवण व स्वाध्याय करना चाहिये। उन्होंने कहा कि जिसे जो वेद मंत्र व उसका अर्थ ज्ञात है उसे उस मंत्र व मंत्रार्थ को अपने परिवार के अपने छोटे सदस्यों को बताना व समझाना चाहिये, तभी वेदों की रक्षा हो सकती है। इसके बाद आचार्य जी ने सामवेद के 397वें मन्त्र को प्रस्तुत कर उसकी विस्तृत व्याख्या की। यह मन्त्र है **‘अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्। आदित्यासो युयोतना नो अंहसः’।** इस मन्त्र का देवता आदित्य है तथा इस मंत्र में मनुष्य के कष्ट आदि दूर करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई है। मन्त्र का अर्थ है कि **‘हे शरीस्थ प्राणों, राष्ट्रस्थ क्षत्रिय राजपुरुषो अथवा आदित्य ब्रह्मचारियों! तुम शरीर, समाज और राष्ट्र से रोग को दूर करो, हिंसावृत्ति, शत्रुकृत हिंसा और हिंसकों को दूर करो, तथा कुमति को दूर करो। साथ ही हमें पाप से पृथक करो।’** इसका भावार्थ करते हुए वेदभाष्यकार डा. रामनाथ वेदालंकार जी ने लिखा है कि प्राणायाम से, क्षत्रिय राजपुरुषों के कर्तव्यपालन से और आदित्य ब्रह्मचारियों के प्रयत्न से राष्ट्र से यथायोग्य रोग, हिंसावृतियां, शत्रुकृत हिंसा-उपद्रव आदि तथा पाप दूर किए जा सकते हैं।

 आचार्य यज्ञवीर जी ने इस मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि शरीर को अस्वस्थ करने वाले किटाणुओं को अमीवा कहते हैं। इन्हें दूर कर शरीर को स्वस्थ रखना है और शरीर को रोगों से दूर रखकर उसे बलवान करना है। इसके साथ जीवन से हिंसा को हटाने के साथ दुमर्ति को भी दूर करना है। अंहिसा की चर्चा कर उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए हिंसा की प्रवृत्ति को दूर कर जीवन को अंहिसामय बनाना है। आचार्य जी ने कहा कि सांसारिक व सामाजिक उन्नति करने के लिए अपनी बुद्धि को शुद्ध व पवित्र रखना भी आवश्यक है। आचार्य जी ने कहा कि मनुष्य का शारीरिक विकास प्रथम माता के गर्भ में व जन्म लेने के बाद बाहर के वातावरण मे माता के ंपोषण द्वारा होता है। **‘माता निर्माता भवति’** की चर्चा कर आचार्य जी ने कहा कि अपनी सन्तान का गर्भ में निर्माण व जन्म होने के बाद सामाजिक वातावरण में निर्माण माता ही करती है। माता वही भोजन करती है जो उसके शिशु के अनुकूल हो। वह उन सब चीजों का त्याग करती है जिससे बालक को किंचित भी हानि हो सकती है। विद्वान आचार्य ने कहा कि बच्चों में संस्कार भी माता ही डालती है। संस्कार की चर्चा को आगे बढ़ाते हुए डा. यज्ञवीर जी ने महाभारत ग्रन्थ से सुभद्रा पुत्र अभिमन्यु के चक्रव्यूह में प्रवेश करने की घटना व अधर्म से उनकी हत्या के प्रकरण पर विस्तार से प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि मनुष्य का निर्माण चार गुरुओं माता, पिता, आचार्य और उपदेशक के द्वारा होता है।

आचार्य जी ने दुर्मति की चर्चा करते हुए शेर और हाथी का उदाहरण देकर कहा कि हाथी बड़ा और बलवान होने पर भी शेर जैसे अपने से छोटे प्राणी की वीरता आदि गुणों के कारण रक्षात्मक रूप से लड़ता है तथा उसे परास्त नहीं कर पाता। आचार्य जी ने कहा कि हिंसा आदि का त्याग करने से हमारे भीतर अच्छे संस्कार विकसित होते हैं। उन्होंने कहा कि महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण जी का आत्मिक विकास अपने समकालीन पुरुषों में सबसे अधिक था। श्री कृष्ण जी की चर्चा के प्रसंग में उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण जी ने महाभारत युद्ध रोकने के सभी प्रयास किये थे और इसी के लिए उन्होंने जरासन्ध जैसे बलवान व अपराजेय राजा का वध किया था।

 आचार्य यज्ञवीर जी ने युधिष्ठिर जी द्वारा अर्जुन के गाण्डीव धनुष की निन्दा करने पर उठे भाईयों के परस्पर विवाद व भावी हानिकारक परिस्थितियों को सोचकर श्री कृष्ण जी ने अपने आत्मिक बल से ही इन दोनों भाईयों के युद्ध को रोका था और अर्जुन को शान्त कर दिया था। आचार्य जी ने कहा कि गीता ग्रन्थ कर्म का उपदेश देता है। गीता के अनुसार अन्याय को सहन करना किसी वीर पुरुष के लिए उचित नहीं है। भीम व दुर्योधन के गदा युद्ध की चर्चा कर बलराम के विरोध को भी श्री कृष्ण जी ने अपनी आत्मिक शक्ति से ही रोका था अन्यथा पाण्डवों का अनिष्ट हो सकता था। आचार्य जी ने दुमर्ति पर प्रकाश डालते हुए यह भी बताया कि कुटिल व्यक्ति ज्ञान का ग्रहण व उसे धारण नहीं कर सकता। कुटिलता को दूर कर ही ज्ञान को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि छल व कपट से प्राप्त की गई विद्या उपयोगी नहीं होती। आचार्य जी ने स्वामी दयानन्द जी के विरोधियों से हुए शास्त्रार्थों की चर्चा कर कहा कि उनके प्रतिपक्षी अपनी कुटिलता के कारण उनके सम्मुख अपनी विद्या को भूल जाते थे। यही कारण था कि वह ऋषि दयानंद से शास्त्रार्थ में धर्म और अधर्म के लक्षण तक नहीं बता सके थे। आचार्य जी ने कहा कि आदित्य का काम अन्धकार व अज्ञान को दूर करना व ज्ञान का प्रकाश करना है। आचार्य जी ने महाभारत के आधार पर यक्ष के प्रश्नों व उनके युधिष्ठिर जी द्वारा दिए गये उत्तरों पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जब यक्ष युधिष्ठिर जी के उत्तर से प्रसन्न हुआ और उन्हें वरदान मांगने के लिए कहा तो उन्होंने अपना कोई अन्य स्वार्थ पूरा न कर अपनी दूसरी माता से उत्पन्न अपने छोटी भाईयों को सचेत व जीवित करने को कहा था। उन्होंने कहा कि इस घटना से भी युधिष्ठिर जी की उन्नत व विकसित आत्मा पर प्रकाश पड़ता है। आचार्य जी ने यह भी कहा कि मनुष्य अपनी बुद्धि के नाश से ही नष्ट होता है।

 आचार्य डा. यज्ञवीर जी ने कहा कि यदि हम वेद मंत्र व उसके अर्थ को पढ़कर उसका दूसरे मनुष्यों मे प्रचार नहीं करते तो केवल स्वयं के लाभ के लिए ही वेद मंत्र पढना उचित नहीं है। वेदों को जानने वाले हर मनुष्य को वेदों का प्रचार अवश्य करना चाहिये। ऋषि तर्पण की चर्चा कर उन्होंने कहा कि स्वाध्याय से अपना ज्ञान व योग्यता बढ़ाकर ही हम ऋषियों के ऋण से उऋण हो सकते हैं। उन्होंने श्रोताओं को परामर्थ देते हुए कहा कि पहले वेद मंत्र व उनके अर्थ पढ़े, उनका मनन करें और फिर उसके अनुसार प्रवचन व आचरण करें। आचार्य जी ने यह भी कहा कि हम आचरण कम करते हैं। आचार्य जी ने आचार्य के अच्छे आचरणों को ही अपनाना तथा उनके किसी बुरे आचरण को देंखे तो उस का आचरण न करना ही हमारी संस्कृति बताई। आचार्य जी ने यह भी कहा कि बच्चे बड़ों की तुलना में अधिक शीघ्र सीखते और स्मरण करते हैं। उन्होंने कहा कि मात्र चार-पांच वर्ष की आयु में ही बच्चा अपनी माता की भाषा को सीख जाता है। बड़ी आयु में इतनी शीघ्रता से ज्ञान ग्रहण नहीं होता। आचार्य जी ने कहा कि गुरुदत्त विद्यार्थी अवश्य इसके अपवाद थे। आचार्य जी ने श्रोताओं को कहा कि हम अपनी सन्तानों को जैसा बनाना चाहते हैं वैसे ही गुण हमें अपने जीवन में भी धारण करने होंगे। आचार्य जी ने कहा कि हम जो भी पढ़े व सुने और जो हमें ठीक लगता है, उसका आचरण हमें अवश्य करना चाहिये। इसी के साथ आचार्य यज्ञवीर जी का प्रवचन सम्पन्न हुआ। उनके प्रवचन के बाद आर्यसमाज के प्रधान श्री महेश चन्द्र शर्मा जी ने सूचनायें दीं। जिन लोगों के आज व आगामी रविवार से पूर्व जन्म दिवस हैं, उन्हें बधाई दी गई। आज बहुत दिनों बाद आर्यसमाज मे ंजाने पर हमारा भी परिचय दिया गया और बताया कि हम लेखन कार्य करते हैं, आर्य पत्र-पत्रिकाओं में हमारे लेख प्रकाशित होते हैं और वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून तपोवन की पत्रिका **‘पवमान’** के सम्पादन कार्य में भी हम सहयोग देते हैं जिसका आरम्भ आर्यसमाज धामावाला देहरादून के विद्वान श्री देवदत्त बाली जी ने किया था। शान्तिपाठ के सामूहिक पाठ के साथ सत्संग समाप्त हुआ। सत्संग में श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम के बालक व बालिकायें जिनकी संख्या लगभग 50 थी, उपस्थित थे। अन्य स्त्री व पुरुष सदस्य एवं समाज के अधिकारी भी आयोजन में सम्मिलित थे। आगामी सप्ताह समाज की स्त्री समाज का उत्सव भी है। उसकी भी सदस्यों को सूचना दी गई। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**